Dr. Vinod Baitha
Deptt of Economics
Marwari college Darbhanga

Economics D.II Subsidiary Lecture - 17

भारत में बेरोजगारी के विभिन्न स्वरूप

जब देश में कार्य करनेवाली जनशक्ति अधिक होती है किन्तु काम करने करने के लिए राजी होते हुए भी बहुतों को प्रचलित मजदूरी पर कार्य नहीं मिलता है तो उस विशेष अवस्था को बेरोजगारी की संज्ञा दी जाती है ऐसे व्यक्तियों का जो मानसिक एवं शारीरिक दृष्टि से कार्य करने योग्य और इच्छुक हैं परन्तु उन्हे प्रचलित मजदूरी पर कार्य नहीं मिलता है उन्हें बेकार कहा जाता है।

पूँजीवादी अर्थव्यवस्था की विशेषता यह है कि व्यापार चक्र के कारण समय-समय पर तेजी और मंदी आती रहती है तेजी के समय रोजगार की मात्रा बढ़ जाती है और मंदी के समय बेरोजगारी फैल जाती है किसी भी देश के लिए अभिशाप है क्योंकि देश के आर्थिक सामाजिक एवं नैतिक जीवन पर इसका बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है आज विश्व के अधिकांश विकसित एवं अर्द्धविकसित देश बेरोजगारी की समस्या का सामना कर रहे हैं कुछ अविकसित देशों में यह समस्या काफी उग्र रूप धारण कर लिया है किसी देश का आर्थिक विकास इस बात पर निर्भर करता है कि बेरोजगारी की समस्या के समाधान में वहाँ तक सफलता पायी है।

बेरोजगारी के संदर्भ में हम कह सकते हैं कि "बेरोजगारी वह परिस्थिति है जिसमें श्रमिकों में काम करने की इच्छा एवं योग्यता रहने के बावजुद भी उन्हे काम नहीं मिलता है अर्थव्यवस्था में यह परिस्थिति प्रायः तब उत्पन्न होती है जब श्रम की पूर्ति उसकी माँग की अपेक्षा अधिक हो जाती है दूसरे शब्दों में काम की उपलब्ध सुविधाओं एवं अवसरों की अपेक्षा जब श्रम शक्ति की पूर्ति अधिक हो जाती है तो बेरोजगारी की परिस्थिति उत्पन्न हो जाती है प्रो० पीगू के अनुसार " कोई व्यक्ति बेकार तब होता है जब वह काम पर लगा हुआ नहीं होता तथा उसे काम करने की इच्छा भी होती है"

A man is unemployed when he is both not employed and also desires to be employed इस प्रकार पीगु ने अपनी परिभाषा में काम करने की इच्छा का जिक्र किया है लेकिन काम करने की योग्यता का नहीं इसमें पीगु की परिभाषा अपूर्ण है बेरोजगारी की परिभाषा के आधार पर भारत में विभिन्न प्रकार के बेरोजगारी पायी जाती है भारत में बेरोजगारी के विभिन्न रूप निम्नलिखित है

1. ऐच्छिक बेरोजगारी Voluntary Unemployment — ऐच्छिक बेरोजगारी वह अवस्था है जिसमे मजदूर प्रचलित मजदूरी की दरों पर काम करना नहीं चाहते। प्रो० डिलार्ड के अनुसार — " ऐच्छिक बेरोजगारी की अवस्था तब होती है जब सक्षम श्रमिक प्रचलित मजदूरी या उससे थोड़ा भी कम मजदूरी स्वीकार करना नहीं चाहते " अधिक मजदूरी के लिए हड़ताल करने वाले श्रमिक ऐच्छिक बेरोजगारी के उदाहरण है।

ये लोग ऐच्छिक बेरोजगार इसलिए कहे जाते हैं क्योंकि ये अपनी मांगों से थोड़ी कम मजदूरी लेकर काम करने के लिए तैयार हो जाएंगे लेकिन कुछ ऐसे श्रमिक होते हैं जो स्वेच्छा से काम करना नहीं चाहते हैं अतः उन्हें बेरोजगार की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता है ऐसे लोगों में स्वेच्छा से काम नहीं करने वाले बेकार-धनी तथा आदतन आलसी गरीब आते हैं जब लोग स्वेच्छा से काम करना स्वीकार नहीं करते तो उन्हें बेरोजगार नहीं कहा जा सकता लेकिन उन्हें ऐच्छिक बेरोजगार या बेरोजगार कहा जा सकता है

2. अनैच्छिक बेरोजगारी - अनैच्छिक बेरोजगारी ऐच्छिक बेरोजगारी की विपरीत स्थिति है अनैच्छिक बेरोजगारी की स्थिति वह है जिसमें प्रचलित मजदूरी की दरों पर अथवा उससे कुछ कम दरों पर भी मजदूर काम करने के लिए तैयार रहते हैं। लेकिन उन्हें रोजगार नहीं मिलता इस प्रकार अनैच्छिक बेरोजगारी श्रमिकों के इच्छा के विरुद्ध उनपर लादी गयी बेरोजगारी है। प्रो० केन्स के अनुसार "अनैच्छिक बेरोजगारी वह अवस्था है जिसमें कोई व्यक्ति प्रचलित वास्तविक मजदूरी से कम वास्तविक मजदूरी पर भी काम करने के लिए तैयार रहता है भले ही वह नगद मजदूरी पर काम करने के लिए तैयार हो या नहीं" केन्स के अनुसार इस प्रकार की बेरोजगारी समाज की सम्पूर्ण प्रभावोत्पादक मांग की कमी के कारण उत्पन्न होती है।

3. अस्थिर बेरोजगारी - अस्थिर बेरोजगारी अर्थव्यवस्था की गतिशीलता एवं श्रम बाजार की अपूर्णता के कारण उत्पन्न होती है प्रो० डीलार्ड के अनुसार "अस्थिर बेरोजगारी तब उत्पन्न होती है जब श्रम बाजार की अपूर्णताओं के कारण लोग अस्थायी रूप से बेकार हो जाते हैं।" अस्थिर बेरोजगारी में अर्थव्यवस्था में कुछ उद्योगों की वस्तुओं की मांग में कमी होती है तो कुछ उद्योगों की वस्तुओं की मांग बढ़ती है इसके फलस्वरूप उद्योगों में उत्थान-पतन होते रहते हैं लेकिन एक उद्योग से दूसरे उद्योगों में कई कारणों से श्रमिकों को जाने में समय लग जाता है इस अंतरिम समय में श्रमिक बेकार हो जाते हैं जिसे अस्थिर बेरोजगारी कहते हैं। अस्थिर बेरोजगारी के कई कारण हो सकते हैं। जैसे श्रमिकों की अगतिशीलता, कुछ व्यवसायों का मौसमी होना, साधन एवं कच्चे माल की कमी, मशीनरी एवं औजारों में गतिरोध, काम की अवसरों की अज्ञानता इत्यादि अर्थव्यवस्था में जितनी भी गतिशीलता होगी अस्थिर बेरोजगारी उतनी ही अधिक होगी।

4. मौसमी बेरोजगारी — मौसमी बेरोजगारी कुछ व्यवसायों के मौसमी स्वभाव के कारण उत्पन्न होती है कुछ वस्तुएँ किसी विशेष मौसम में ही उत्पन्न होती हैं अतः उस वस्तु विशेष के उत्पादन में लगे हुए लोगों को अथवा यदि वह वस्तु कच्चा माल है तो उससे निर्मित वस्तुएँ तैयार करने वाले लोगों को कुछ महिनों के लिए रोजगार मिलता है तथा साल के शेष भाग में बेकार रहते हैं इसे ही मौसमी बेरोजगारी कहते हैं भारत में कृषि कार्य में लगे हुए मजदूर को साल में कुछ महीने

ही रोजगार मिलता है शेष समय वे बेकार रहते हैं इस प्रकार चीनी के कारखाने में लगे हुए मजदूर भी नवम्बर से अप्रैल तक ही उत्पादन का कार्य करते हैं शेष महिने बेकार रहते हैं जिसे मौसमी बेरोजगारी कहा जाता है।

5. औद्योगिक ढाँचे संबंधी बेरोजगारी —— औद्योगिक ढाँचे सम्बंधी बेरोजगारी उद्योगों के ढाँचे में परिवर्तन के फलस्वरूप उत्पन्न होती है। जब किसी उद्योग की माँग में कमी होती है तो उद्योगों का ह्रास होता है लेकिन दूसरी ओर अन्य उद्योगों से श्रमिकों की माँग होती है क्योंकि उनकी पूर्ति रुकती नहीं है लेकिन ह्रास होने वाले उद्योगों से श्रमिक दूसरे उद्योगों में नहीं जाते इसका कारण यह है कि दूसरे उद्योगों में मिलने वाली मजदूरी कम हो सकती है अथवा उस उद्योग में काम मिलने के लिए विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता हो सकती है। कभी-कभी श्रमिक दूसरे उद्योगों में इसलिए भी नहीं जाते क्योंकि वे सोचते हैं कि ह्रासोन्मुख उद्योग की वस्तुओं की माँग शीघ्र बढ़ेगी और उन्हें काम मिल जाएगा। अतः इन सभी कारणों से उत्पन्न बेरोजगारी को औद्योगिक ढाँचे सम्बंधी बेरोजगारी कहा जाता है औद्योगिक ढाँचे संबंधी बेरोजगारी में कुछ उद्योगों में श्रमिकों की कमी रहती है तो कुछ उद्योगों में श्रमिकों की संख्या अधिक रहती है।

6. चक्रीय बेरोजगारी —— चक्रीय बेरोजगारी चक्रीय व्यवसाय के कारण उत्पन्न होती है। पूँजीवादी अर्थव्यवस्था की यह विशेषता है कि उसमें व्यवसाय चक्र आते रहते हैं व्यवसाय चक्र की अवस्था में अर्थव्यवस्था में क्रमशः तेजी तथा मंदी आती रहती है। तेजी की अवस्था में बेरोजगारी की स्थिति में कमी होती है और मंदी की अवस्था में बेरोजगारी बढ़ जाती है इस प्रकार से उत्पन्न बेरोजगारी को चक्रीय बेरोजगारी कहते हैं। अर्थव्यवस्था के विकास के लिए चक्रीय बेरोजगारी को कम करना अत्यन्त आवश्यक होता है। अस्थिर बेरोजगारी, औद्योगिक ढाँचे की बेरोजगारी तथा चक्रीय बेरोजगारी को खुली हुई बेरोजगारी भी कहा जाता है।

7. छुपी हुई बेरोजगारी —— छुपी हुई बेरोजगारी की अवस्था में श्रमिक अपने काम पर लगे रहते हैं लेकिन उत्पादन में उनका योगदान अत्यन्त अथवा नहीं के बराबर होता है। प्रो० वी.के.आर.वी.राव के अनुसार छुपी हुई बेरोजगारी तब होती है जब श्रमिक अपने काम पर लगे रहते हैं लेकिन उनका योगदान उत्पादन में शून्य के बराबर होता है। क्योंकि यदि वे काम करना बंद भी कर दें तो कुल उत्पादन में कोई परिवर्तन नहीं होगा वास्तव में काम पर लगे रहने पर भी ऐसे श्रमिकों को बेरोजगार ही कहना बेहतर होगा। ऊपर से देखने पर लगता है कि श्रमिक काम पर लगे हुए हैं लेकिन उनके पीछे वास्तविकता यह है कि वे बेरोजगार ही हैं क्योंकि उत्पादन के कार्य में उनका लगे रहना या नहीं रहना बराबर है इसलिए इस प्रकार की बेरोजगारी को छुपी हुई बेरोजगारी कहते हैं। ऐसी अवस्था में उत्पादन के साधनों पर काम करने वाले श्रमिकों की संख्या इतनी अधिक होती है कि उन्हें अन्यत्र भेज दिया जाय तो कुल उत्पादन में कमी नहीं होगी। भारत में कृषि के क्षेत्र में छुपी हुई बेरोजगारी पायी जाती है क्योंकि भूमि पर अपेक्षाकृत अधिक भार होती है ऐसी अवस्था में कृषि से श्रमिकों को हटा दिया जाय तो कृषि के उत्पादन में कमी नहीं होगी।

8. सामान्य अथवा अस्थायी बेरोजगारी —— सामान्य अथवा अस्थायी बेरोजगारी में जो श्रमिकों की स्वतंत्र गतिशीलता के कारण उत्पन्न होती है।

इसे सामान्य अथवा अस्थायी बेरोजगारी कहते है श्रमिक प्रायः एक स्थान दुसरे स्थान पर काम छोड़कर जाते रहते है लेकिन दुसरे स्थान पर उन्हे शीघ्र रोजगार नहीं मिल जाता है इसके चलते कभी-कभी उन्हे बेरोजगार रहना पड़ता है जिन्हे सामान्य अथवा अस्थायी बेरोजगारी कहते है। इस प्रकार की बेरोजगारी हर समय हर समाज में पायी जाती है वास्तव में यह बेरोजगारी की न्युनतम सीमा होती है और इस सीमाके नीचे बेरोजगारी कोनहीं नापा जा सकता है।

इस प्रकार विकसीत और अल्पविकसित देशों में बेकारी, बेरोजगारी की समस्या वर्तमान समय में गम्भीर बनी हुई है सभी देश अपने-अपने स्तर से इसका समाधान करने की कोशिश में लगे हुए है. बेरोजगारी किसी भी रूप में क्यों नहो वह समाज के लिए राष्ट्र के विकास के लिए अर्थव्यवस्था को मजबुत बनाने के लिए यह चिंता का विषय है क्योंकि इससे हमारे देश या अन्य देशों की श्रम शक्ति की बर्बादी होती है यही कारण है कि विभिन्न उपायों द्वारा प्रत्येक देश बेरोजगारी को समाप्त कर पूर्ण रोजगार की स्थिति लाने का प्रयास कर रहे है. बेरोजगारी किसी भी रूप में क्यों नहो वह देश समाज के लिए अभिशाप है।